॥ श्रीः ॥

भाषाचन्द्रिका ।

पण्डित नारायणशास्त्री पटवर्धन विरचित
हिन्दी भाषा का व्याकरण ।

BHASHACHANDRIKA

AN

EASY HINDI GRAMMAR

BY

NARAYAN SHASTRI PATVARDHAN
Author of the English Guide,
Sanskrit Sopan and Riju-
Vyakaran Deepika, &c.

PUBLISHED BY
Pt. Bhaiya Shastri
DURGAGHAT, BENARES CITY.

Printed by B. L. Pawagi at the
Hitchintak Press, Ramghat, Benares City.

बार १००००) 1914. (मूल्य =)॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

भाषाचन्द्रिका ।

॥ दोहा ॥

श्री शङ्कर गुरु पद कमल, वन्दि सदा सुखमूल ।
विरचत भाषाचन्द्रिका, हिन्दी भाषा मूल ॥

प्रथम अध्याय ।

भाषा उसे कहते हैं जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन का विचार प्रकाश करता है ।

जिसमें लिखने और बोलने की शुद्ध रीति वर्णन की गई है उसे व्याकरण कहते हैं ।

हिन्दी व्याकरण में वर्णविचार, शब्दविचार और वाक्यविचार इन तीन विषयों का वर्णन है ।

वर्णविचार में अक्षरों के आकार, उच्चारण और उनके स्थानादि का वर्णन है । शब्दविचार में शब्दों के भेद तथा उनकी व्युत्पत्ति आदि का वर्णन है । वाक्य-विचार में शब्दों से वाक्य बनाने की रीतियों का वर्णन है ।

वर्ण या अक्षर उसे कहते हैं जिसका विभाग न हो सके ।

वर्णों से शब्द, शब्दों से वाक्य और वाक्यों से निबन्ध बनते हैं ।

अक्षर दो प्रकार के होते हैं—स्वर और व्यञ्जन ।

जिस वर्ण का उच्चारण बिना दूसरे किसी वर्ण की सहायता से होसके उसे स्वर कहते हैं ।

जिसका उच्चारण स्वर की सहायता बिना न हो सके उसे व्यञ्जन कहते हैं ।

स्वर के मुख्य तीन भेद हैं—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत ।

जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा काल लगे उसे ह्रस्व जैसे 'राम' में 'अ' जिसके उच्चारण के लिये दो मात्रा काल लगे उसे दीर्घ जैसे 'रा' में 'आ' और जिसके उच्चारण के लिये तीन मात्रा काल लगे उसे प्लुत कहते हैं जैसे 'गोविन्दा ३ में 'आ ३'। प्लुत स्वर के आगे ३ अङ्क लिखने की चाल है। अ[१], इ, उ,

१ व्यञ्जन के साथ जो स्वर जोड़े जाते हैं उनका स्वरूप ॥

ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं ः

ऋ, ऌ, ए, [1]ऐ, ओ, [1]औ, ये नौ मुख्य स्वर हैं। आ, ई इत्यादि इन्हीं के भेद हैं । [2]कखगघङ चछजझञ टठडढण तथदधन पफबभम यरलव शषसह ये व्यंजन हैं। अनुस्वार और विसर्ग भी एक प्रकार के [3]व्यञ्जन हैं। अनुस्वार वर्ण के ऊपर और विसर्ग वर्ण के आगे लिखा जाता है । इनमें कखगघङ को कवर्ग, चछजझञ को चवर्ग, टठडढण को टवर्ग, तथदधन को तवर्ग, पफबभम को पवर्ग, यरलव को अन्तःस्थ और शषसह को ऊष्म कहते हैं।

जिसमें दो या दो से अधिक अक्षर एक में मिले रहते हैं उसे संयुक्ताक्षर कहते हैं जैसे पत्थर, अल्प, सत्य. उसमें त्थ, ल्प और त्य ये संयुक्त वर्ण हैं।

संस्कृत में संयुक्त वर्ण से पहला ह्रस्व स्वर दीर्घ बोला जाता है किन्तु भाषा में ऐसा कहीं होता है और कहीं नहीं ।

---

१ हिन्दी भाषा में ऐ और औ ये दो स्वर ऐसे विलक्षण पाये जाते हैं कि जिनका उच्चारण संस्कृत में नहीं है जैसे है में ै और चौड़ा में ौ।

२ कख इत्यादि जो व्यंजन लिखे हैं उनमें स्वर मिला हुआ है।

३ अनुस्वार और विसर्ग को स्वर में न गिनना यह हिन्दी के व्याकरणलेखकों की गलती है।

भाषा में संयुक्त वर्ण से पहला अक्षर वहां दीर्घ बोला जाता है जहां दोनों संयुक्त अक्षर एक हों जैसे कुत्ता, भट्टा, रस्सा, खट्टा, इत्यादि ।

जहां दो भिन्न अक्षरों का संयोग रहता है उस संयुक्ताक्षर से पूर्ववर्ण भाषा में प्रायः ह्रस्व ही बोला जाता है जैसे इन्हें, उन्हें, तुम्हारा इत्यादि । कहीं २ सत्रह, इक्यावन, विस्वा इत्यादि में दीर्घ बोलते हैं ।

कविता में मात्र ऊपर कहा हुआ कोई नियम नहीं है किन्तु ह्रस्व दीर्घ की मात्रा गिनना केवल कवि की इच्छा पर निर्भर है । जैसे—

युगल चरण सेवत जगत, जपत रैन दिन तोहि ।
जगमाता सरस्वति सुमिर, उक्ति युक्ति दे मोहि ॥

इस दोहे में 'सरस्वति' शब्द में 'स्व' इस संयुक्ताक्षर से पहला 'र' ह्रस्व अर्थात् एकमात्रिक बोला जाता है और इसी दोहे में 'उक्ति', 'युक्ति' इन शब्दों में 'क्ति' से पूर्व वर्ण 'उ' और 'यु' दीर्घ अर्थात् द्विमात्रिक बोला जाता है ।

मुख के जिस अवयव से जिस अक्षर का उच्चारण होता है वह उस अक्षर का स्थान कहाता है । ये आठ हैं । किस अक्षर का कौन स्थान है सो

नीचे लिखा है।

वर्ण	स्थान
१ अ क ख ग घ ङ[1] ह	कण्ठ
२ इ च छ ज झ ञ[1] य श	तालु
३ ऋ ट ठ ड ढ ण[1] र ष	मूर्धा
४ ऌ त थ द ध न[1] ल स	दन्त
५ उ प फ ब भ म[1]	ओष्ठ
६ ए ऐ	कण्ठ और तालु
७ ओ औ	कण्ठ और ओष्ठ
८ व	दन्त और ओष्ठ

द्वितीय अध्याय।

शब्दविचार।

कान से जो सुनाई देता है उसे शब्द कहते हैं। पशु पक्षि आदि का भी शब्द कान से सुनाई देता है पर व्याकरण में उसका विचार नहीं किया जाता किन्तु मनुष्योच्चारित अर्थबोधक शब्दों ही का विचार व्याकरण में होता है।

---

१ ङ ञ ण न म इनका नासिका भी स्थान है इसी लिये यह अनुनासिक कहाते हैं। कहीं २ अकारादि भी अनुनासिक होते हैं। उनके अनुनासिक गुण को बोधन कराने के लिये अर्धचन्द्र ँ लिखते हैं।

अर्थबोधक शब्द तीन प्रकार के हैं—संज्ञा, अव्यय और क्रिया ।

संज्ञा किसी वस्तु के नाम को कहते हैं जैसे—घड़ा, मिट्टी के एक प्रकार के वासन की संज्ञा है, काशी, एक नगर का नाम है, पीपल, एक पेड़ की संज्ञा है, भलाई, एक गुण का नाम है ।

संज्ञा के तीन भेद हैं-रूढि, यौगिक और योगरूढि ।

रूढि संज्ञा उसे कहते हैं जो किसीसे न निकली हो जैसे मनुष्य, घोड़ा इत्यादि ।

यौगिक संज्ञा उसे कहते हैं जो पदों के योग से अथवा प्रत्यय लगाके बनी हो जैसे—अङ्गरखा अर्थात् अङ्ग की रक्षा करनेवाला, सेवक = सेवा करनेवाला, बालक्रीडा, लड़कों को खेलवाड़ इत्यादि ।

योगरूढि संज्ञा उसे कहते हैं जो देखने में यौगिक संज्ञा के समान मालूम पड़े पर अर्थ में इतनी विशेषता रखती हो कि जिन पदों के योग से वह बनी है उनका कुछ भी अर्थ न होकर एक विलक्षण ही अर्थ को प्रकाश करे । जैसे—पीताम्बर शब्द से पीला वस्त्र धारण करनेवाला नहीं

समझा जाता किन्तु भगवान् विष्णु ही का बोध होता है । इसी तरह पङ्कज शब्द से कीचड़ में उत्पन्न होनेवाले कीड़ों का बोध नहीं होता किन्तु कमल पुष्प का ।

संज्ञा के और भी पांच भेद हैं । जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, गुणवाचक, भाववाचक और सर्वनाम ।

जातिवाचक उसे कहते हैं कि जिसके कहने से जाति मात्र का बोध हो जैसे—मनुष्य कहने से मनुष्य मात्र का बोध होता है, घोड़ा कहने से अश्व जाति का बोध होता है ।

जिससे एक व्यक्ति का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक कहते हैं जैसे--रामा, विश्वेश्वरप्रसाद, कार्तिकप्रसाद इत्यादि ।

---

१ जहां रामा और विश्वेश्वरप्रसाद नाम की दस बारह व्यक्ति होंगी वहां रामा, विश्वेश्वरप्रसाद पुकारने से अवश्य ही एक व्यक्ति का बोध न होगा किन्तु सबों का, तब जातिवाचक से इसमें क्या भेद हुआ ? ठीक है, भेद इतना ही है कि व्यक्तिवाचक से कहीं तो एक व्यक्ति का बोध होंना सम्भव है किन्तु जातिवाचक में यह बात सर्वथा असम्भव है। जितने जातिवाचक शब्द हैं सबोंसे अनेक व्यक्तियों ही का बोध होगा, एक व्यक्ति का कभी न होगा।

गुणवाचक संज्ञा वह है जिससे किसी वस्तु का गुण प्रगट हो जैसे—सफेद कपड़ा, कोमल फूल, नीली साड़ी इत्यादि ।

भाववाचक संज्ञा वह है जिससे पदार्थ का धर्म[1] वा स्वभाव जाना जाय अथवा किसी व्यापार का बोध हो जैसे-ऊंचाई, गहराई, बोलचाल दौड़धूप, लेनदेन इत्यादि ।

संज्ञाओं बदले जिसका प्रयोग किया जाता है उसे सर्वनाम कहते हैं । मैं, तू, वह, यह, कोई, कौन इत्यादि सर्वनाम हैं । सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य को सुन्दरता आती है, द्विरुक्ति नहीं होती अर्थात् बार २ एक ही व्यक्तिवाचक शब्द का पुनः पुनः प्रयोग नहीं करना पड़ता जैसे "मोहन आया और वह अपनी पुस्तक उठा लेगया" यहां मोहन का पुनः २ प्रयोग नहीं करना पड़ा किन्तु उसके लिये 'वह' सर्वनाम लगाया गया ।

सर्वनामों की यह भी प्रकृति है कि वे पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में एकसे ही बने रहते है । 'मैं'

---

१ वास्तव में यह संज्ञा का भेद कहना उचित नहीं है किन्तु इसको विशेषण कहना योग्य है क्योंकि वाक्य में और संज्ञाओं के नाई यह अकेली नहीं आ सकती ।

यह अपना वाचक है, इसे उत्तम पुरुष कहते हैं। 'तू' यह प्रतिद्वन्द्वी अर्थात् जो पुरुष सामने बात करता है, उसका वाचक है इसे मध्यम पुरुष कहते हैं और 'वह' जो परोक्ष अर्थात् 'मैं' और 'तू' को छोड़ तीसरे का वाचक है इसे अन्य पुरुष कहते हैं। हम, आप[1], वे इत्यादि इन्हीं के बहुवचन के रूप हैं। इन तीनों को पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

'यह' इसको निश्चयवाचक सर्वनाम, 'कोई' इसको अनिश्चयवाचक सर्वनाम, 'कौन' इसको प्रश्नवाचक सर्वनाम, 'आप' इसको आदरप्रदर्शक सर्वनाम और 'जो' 'जौन' इत्यादि को सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। इनके कारकों के रूप आगे लिखे जायँगे।

---

१ आजकल शिष्टसमाज में जहां तीन आदमी देवदत्त, यज्ञदत्त और विष्णुमित्र बातचीत करते हैं वहां यज्ञदत्त से बोलते समय देवदत्त तो यज्ञदत्त को 'आप' कहेहीगा पर बीच में यदि विष्णुमित्र कुछ कह बैठे तो देवदत्त यज्ञदत्त से (विष्णुमित्र की ओर अंगुली दिखाकर) कहगा कि 'आप ऐसा कहते हैं,' वास्तव में 'ये ऐसा कहते हैं' कहना उचित है परन्तु 'यह' इस निश्चयवाचक सर्वनाम के बदले 'आप' का प्रयोग किया जाता है। कोई कहते हैं कि अन्यपुरुष को आप आदेश हुआ है।

तद्धित ।

सामान्य संज्ञा शब्दों के आगे कुछ प्रत्यय लगा देने से तथा कुछ आदेश करने से अपत्यवाचक, कर्तृवाचक, भाववाचक, लघुवाचक और गुणवाचक संज्ञा सिद्ध होती है । इन्हींको हिन्दी व्याकरणकार तद्धितान्त कहते हैं ।

शिव–शैव, विष्णु–वैष्णव, जिन–जैन, बुद्ध–बौद्ध वसिष्ठ–वासिष्ठ, दयानन्द–दयानन्दी, रामानन्द–रामानन्दी इत्यादि शब्दों में शिव, विष्णु आदि शब्दों से तद्धित अ, ई प्रत्यय लगे हैं और आदि स्वर को ऐ औ आ इत्यादि आदेश हुए हैं । ये अपत्यवाचक संज्ञाशब्द कहाते हैं ।

लकड़ी = लकड़िहारा, आम = आमवाला, मक्खन मक्खनिया इत्यादि शब्दों में लकड़ी, आम, मक्खन आदि शब्दों से हारा, वाला, इया इत्यादि प्रत्यय लगते हैं ये कर्तृवाचक संज्ञाशब्द कहाते हैं ।

चतुराई, लम्बाई, मनुष्यत्व, गम्भीरता, सच्चापन, बुढ़ापा, सजावट, चिकनाहट इत्यादि शब्दों में चतुर लम्बा, मनुष्य, गम्भीर, सच्चा, बुड्ढा, सजा, चिकना इत्यादि संज्ञाशब्दों से आई, त्व, ता, पन, पा, वट, हट

इत्यादि प्रत्यय लगा देने से भाववाचक संज्ञाशब्द सिद्ध होते हैं ।

रस्सा, नाला, दौरा, खाट इत्यादि शब्दों में आकार के स्थान में ईकार आदेश कर देने से अथवा इया प्रत्यय लगादेने से रस्सी, नाली, दौरी, खटिया इत्यादि लघुत्ववाचक संज्ञाशब्द सिद्ध होते हैं ।

ठण्ड---ठण्डा, भूख---भूखा, प्रमाण---प्रामाणिक, पण्डा---पण्डित, दुःख---दुःखित, झांझ---झांझिया, बखेड़ा---बखेड़िया, रंग---रंगीला, बन--बनैला, जंगल-जंगली, दया---दयालु, झड़गा-झगड़ालु, बल---बली, श्री-श्रीमन्त, धन-धनवान् इत्यादि शब्दों में आ, इक, इत, इया, ईला, ऐला ई, आलु, मन्त, वान् इत्यादि प्रत्यय लगे हैं ये सब गुणवाचक संज्ञाशब्द कहाते हैं ।

लिंग ।

संस्कृत तथा मराठी आदि देशभाषा में पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग ये तीन लिंग होते हैं परन्तु हिन्दी में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दो ही लिंग हैं ।

---

१ हिन्दी भाषा संस्कृत से उत्पन्न हुई है इसलिये हिन्दी शब्दों का लिंगनिर्णय प्रायः संस्कृत ही के अनुसार होता है ।

भाषा में जिन शब्दों के जोड़े हैं उनका पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग जानना कुछ विशेष कठिन नहीं है जैसे पुरुष–स्त्री, हाथी–हथनी, घोड़ा,—घोड़ी, नर––नारी इत्यादि। पर जिनके जोड़े का शब्द नहीं हैं उनका लिंग जानने की साधारण रीति यह है कि इकारान्त और ऊकारान्त शब्दों को छोड़ बहुधा संज्ञाशब्द पुल्लिङ्ग होते हैं।

जिन भाववाचक शब्दों के अन्तमें आव, त्व, पन, वा, पा हों, वे सब पुल्लिंग होते हैं। जैसे चढ़ाव, मिलाव, मनुष्यत्व, पशुत्व, सीधापन, बुढ़ापा इत्यादि।

जिन भाववाचक शब्दों के अन्त में आई, ता, वट, हट हों वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे–चतुराई, भलाई, उत्तमता, बनावट, चिल्लाहट इत्यादि।

समास में अन्तिम शब्द के अनुसार लिंग होता है। जैसे—दयासागर, यहां दया शब्द स्त्रीलिंग होने पर भी अन्तिम शब्द सागर पुल्लिंग होने से द-

---

परन्तु संधि राशि आदि शब्द संस्कृत में पुल्लिंग होने पर भी हिन्दी साहित्यवाले लोग उनका स्त्रीलिंग में प्रयोग करते हैं। संस्कृत में जो नपुंसक शब्द हैं हिन्दी में वे बहुधा पुल्लिंग ही होते हैं वास्तव में शब्दों के लिंग का कोई ठीक नियम नहीं हैं जो शब्द जिस लिंग में बोला जाता हो वही उसका लिंग समझना चाहिये।

यासागर पुल्लिङ्ग हुआ । पण्डितसभा यहां पंडित शब्द पुल्लिङ्ग होने पर भी सभा शब्द स्त्रीलिंग होने से पण्डित-सभा शब्द स्त्रीलिङ्ग हुआ ।

भाषा के पुल्लिङ्ग शब्दों का स्त्रीलिंग रूप बनाने की छः रीतियां हैं ।

(१)कुछ आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्तमें ई, कहीं इया, कहीं अ करदेने से वे स्त्रीलिङ्ग होजाते हैं जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
चकवा	चकई या चकवी
बरछा	बरछी
लड़का	लड़की
गदहा	गदही
लोटा	लुटिया
कुत्ता	कुतिया
बछडा या बछवा	बछिया
भैंसा	भैंस

(२) कहीं आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त में ई लगादेने से वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसे-

१ इन प्रत्ययों के सिवाय जहां जैसी जरूरत हो कुछ अक्षरों का लोप वा कुछ आदेश भी कल्पना करलेना जैसे चकई में 'वा' का लोप व० । इसी तरह आगे के नियमों में भी समझना ।

पु०	स्त्री०
गड़ास	गड़ासी
बिलार	बिलारी
नेउर	नेउरी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी
दास	दासी
रोट	रोटी
देव	देवी

(३) व्यवसाय करनेवालों के वाचक पुल्लिङ्ग शब्दोंके अन्त में इन लगादेने से वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे—

पु०	स्त्री०
धोबी	धोबिन
तमोली	तमोलिन
कुंजड़ा	कुंजडिन
तेली	तेलिन
कोइरी	कोइरिन
कुनबी	कुनबिन
लोहार	लोहारिन
हलुआई	हलुआइन

(४) कहीं पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त में नी लगा देने से वे स्त्री लिंग होते हैं । जैसे—

पु०	स्त्री०
ऊंट	ऊंटनी
बाघ	बाघिनी
सिंह	सिंहनी
हाथी	हथिनी

(५) पदवीवाचक पुल्लिंग शब्दों के अन्त में आइन लगादेने से वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—

पु०	स्त्री०
पण्डित	पण्डिताइन
बनिया	बनियाइन
पाण्डे	पँडाइन
ओझा	ओझाइन
चौबे	चौबाइन
तिवारी	तिवराइन
पाठक	पठकाइन
मिसिर	मिसिराइन
ठाकुर	ठकुराइन
बाबू	बबुआइन
दुबे	दुबाइन
सुकुल	सुकुलाइन

(६) बहुतसे पुल्लिंग शब्दों का स्त्रीलिंग बनाने में रूप ही पलट जाता है। जैसे—

पु०	स्त्री०
नर	मादा
लाल	मुनिया
राजा	रानी
बैल	गाय
पिता	माता
भाई	बहिन
पुरुष	स्त्री

वचन ।

संस्कृत में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ऐसे तीन वचन हैं परन्तु हिन्दी में एकवचन और बहुवचन दोही होते हैं । जिस शब्द के कहने से एक पदार्थ का बोध होता है वहां एकवचन होता है और जिसके कहने से एक से अधिक पदार्थ समझे जाते हैं वहां बहुवचन होता है । जैसे लड़का आता है लड़के आते हैं । कहीं २ एकवचनान्त शब्द के आगे गण, जाति, लोग इत्यादि शब्द लगाकर भी बहुवचन का बोध होता है । जैसे—पण्डित पढ़ाता है [एकवचन] । पण्डित लोग पढाते हैं [बहुवचन] ग्रह चमकता है [एकव०] । ग्रहगण चमकता है

(बहुवचन)। शब्दों के एकवचन और बहुवचन के रूप आगे लिखे जायंगे।

कारक के लक्षण।

जिसके द्वारा वाक्य में दूसरे शब्दों के साथ संज्ञा का ठीक २ सम्बन्ध ज्ञात होता है उसे कारक कहते हैं।

हिन्दी में आठ कारक होते हैं—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, संबन्ध, अधिकरण और संबोधन।

कर्ता उसे कहते हैं जो क्रिया को करे उसका कोई चिन्ह नहीं है परन्तु सकर्मक क्रिया के कर्ताके आगे अपूर्णभूत को छोड़ शेष भूतों में 'ने' आता है। जैसे लड़का पढ़ता है। पण्डित पढ़ाता था। गुरुने पढ़ाया इत्यादि।

कर्म उसे कहते हैं जिसमें क्रिया का फल रहे। इसका चिन्ह 'को' है जैसे नौकर को बुलाओ। घोड़े को देखते हैं।

जिसके द्वारा कर्ता व्यापार को सिद्ध करता है उसे करण कहते हैं। इसका चिन्ह 'से' है। जैसे लाठी से मारता है।

जिसके लिये कर्ता व्यापार करता है उसे सम्प्र-

दान कहते हैं इसका चिन्ह 'को, के लिये' है जैसे मैंने रामा को पोथी दी । मैंने लड़के के लिये खिलवना लाया ।

क्रिया के विभाग की अवधि को अपादान कहते हैं । इसका चिन्ह 'से' है जैसे पेड़ से जामून गिरते हैं । वह घोड़े से गिरता है ।

जिससे कोई संबन्ध प्रतीत हो उसे सबन्धकारक कहते हैं । इसका 'का-की-के' चिन्ह हैं । जैसे राजा का घोड़ा । दामोदर की पुस्तक । आम के पत्ते ।

कर्ता और कर्म के द्वारा जो क्रिया का आधार है उसे अधिकरण कहते हैं । इसका 'में, पै, पर' चिन्ह है । जैसे फूल में सुगन्ध होती है । वह हाथी पर बैठता है ।

संबोधन उसे कहते हैं जिससे कोई किसी को पुकारकर या चिताकर अपने संमुख करे । उसके 'हे, हो, रे, अरे' इत्यादि चिन्ह हैं जैसे हे महाराज, मोहन हो, अरे मित्र इत्यादि ।

---

१ ऊपर लिखी हुई सात बिभक्तियों के चिन्ह संज्ञा के आगे आते हैं पर सम्बोधन के चिन्ह प्रयोग करनेवाले की इच्छानुसार पहले अथवा आगे आते हैं ।

संज्ञाओं के आठों कारक में लिङ्ग और वचन के भेद से रूप में कैसा भेद होता है सो आगे लिखे हुए कुछ उदाहरणों से विदित होगा।

ह्रस्व अकारान्त पुलिङ्ग बालक शब्द ।

	एक०	बहु०
कर्ता	बालक, बालक ने	बालक, बालकों नें
कर्म	बालक को	बालकों को
करण	बालक से	बालकों से
सम्प्रदान	बालक को, के लिये	बालकों को, के लिये
अपादान	बालक से	बालकों से
सम्बन्ध	बालक का-की-के	बालकों का, की, के
अधिकरण	बालक में-पै-पर	बालकों में-पै-पर
संबोधन	हे बालक	हे बालकों।

ह्रस्व अकारान्त स्त्रीलिङ्ग चील शब्द।

	एक०	बहु०
कर्ता	चील	चीलें
कर्म	चील कों	चीलों को
करण	चील से	चीलों से
सम्प्रदान	चील को, के लिये	चीलों को, के लियें
अपादान	चील से	चीलों से

संबन्ध	चील का-की-कें	चीलों का-की-के
अधिकरण	चील में-पै-पर	चीलों में-पै-पर
संबोधन	हे चील	हे चीलों ।

आकारान्त पुल्लिङ्ग लड़का शब्द ।

	एक०	बहु०
कर्ता	लड़का, लड़के नें	लड़के, लड़कों नें
कर्म	लड़के को	लड़कों को
करण	लड़के से	लड़कों से
संप्रदान	लड़के को, के लिये	लड़कों को, के लिये
अपादान	लड़के से	लड़कों से
संबन्ध	लड़के का, की, के	लड़कों का, की, के
अधिकरण	लड़के में-पै-पर	लड़कों में-पै-पर
संबोधन	हे लड़के	हे लड़कों ।

आकारान्त पुल्लिङ्ग दादा शब्द ।

	एक०	बहु०
कर्ता	दादा, दादा ने	दादा, दादों, दादाओं ने
कर्म	दादा को	दादाओं को
करण	दादा से	दादाओं से, दादों से
संप्रदान	दादा को	दादाओं को
अपादान	दादा से	दादोंसे या दादाओं से

संबन्ध	दादा का, की, के	दादों या दादाओं का, की, के
अधिकरण	दादा में	दादों वा दादाओं में
संबोधन	हे दादा	हे दादा वा दादाओं ।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग गैया शब्द ।

	एक०	बहु०
कर्ता	गैया, गैया ने	गैया, गैयाओं ने
कर्म	गैया को	गैयाओं को
करण	गैया से	गैयाओं से
संप्रदान	गैया को, के लिये	गैयाओं को, के लिये
अपादान	गैया से	गैयाओं से
संबन्ध	गैया का, की, के	गैयाओं का, की, के
अधिकरण	गैया में, पै, पर	गैयाओं में, पै, पर
संबोधन	हे गैया	हे गैयाओं ।

ह्रस्व इकारन्त पुल्लिङ्ग हरि शब्द ।

	एक०	बहु०
कर्ता	हरि वा हरि ने	हरि वा हरियों ने
कर्म	हरि को	हरियों को
करण	हरि से	हरियों से
संप्रदान	हरि को, के लिये	हरियों को, के लिये

अपादान	हरि से	हरियों से
सम्बन्ध	हरिका, की, के	हरियों का, की, के
अधिकरण	हरि में, पै, पर	हरियों में, पै, पर
संबोधन	हे हरि	हे हरियों ।

ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिंग बुद्धि शब्द भी हरि शब्द के समान जानना केवल कर्ता कारक के बहुवचन में बुद्धियां ऐसा होता है ।

दीर्घ ईकारान्त पुल्लिंग माली शब्द ।

	एक०	बहु०
कर्ता	माली, माली ने	माली, मालियों ने
कर्म	माली को	मालियों को
करण	माली से	मालियों से
संप्रदान	माली को, के लिये	मालियों को, के लिये
अपादान	माली से	मालियों से
संबन्ध	माली का, की, के	मालियों का, की , के
आधिकरण	माली में, पै, पर	मालियों में, पै, पर
संबोधन	हे माली	हे मालियों ।

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग घोड़ी शब्द भी माली शब्द के समान चलता है किन्तु कर्ता कारक के बहुवचन में घोड़ियां ऐसा होता है ।

ह्रस्व उकारान्त पुल्लिंग साधु शब्द।

	एक०	बहु०
कर्ता	साधु, साधु ने	साधु, साधुओं ने
कर्म	साधु को	साधुओं को
करण	साधु से	साधुओं से
संप्रदान	साधु को, के लिये	साधुओं को, के लिये
अपादान	साधु से	साधुओं से
संबन्ध	साधु का, की, के	साधुओं का, की, के
अधिकरण	साधु में, पै, पर	साधुओं में, पै, पर
संबोधन	हे साधु	हे साधुओं।

ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिंग धेनु शब्द भी साधु शब्द के समान जानना।

दीर्घ ऊकारान्त पुल्लिंग शालू शब्द।

कर्ता	शालू, शालु ने	शालू, शालुओं ने
कर्म	शालू को	शालुओं को
करण	शालू से	शालुओं से
संप्रदान	शालू को, के लिये	शालुओं को, के लिये
अपादान	शालू से	शालुओं से
संबन्ध	शालू का, की के	शालुओं का, की, के

अधिकरण	शालू में	शालुओं में
संबोधन	हे शालू	हे शालुओं ।

दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग झाडू शब्द भी इसी के समान जानना ।

एकारान्त पुल्लिंग पाण्डे शब्द ।

	एक०	बहु०
कर्ता	पांडे, पांडे ने	पांडे, पांडेओं ने
कर्म	पांडे को	पांडेओं को
करण	पांडे से	पांडेओं से
संप्रदान	पाण्डे को, के लिये	पाण्डेओं को, के लिये
अपादान	पांडे से	पांडेओं से
संबन्ध	पांडे का, की, के	पांडेओं का, की, के
अधिकरण	पांडे में, पै, पर	पांडेओं में, पै, पर
संबोधन	हे पांडे	हे पांडओं ।

ओंकारान्त पुल्लिंग कोदो शब्द ।

	एक०	बहु०
कर्ता	कोदो, कोदोनें	कोदो, कोदोओंने
कर्म	कोदोको	कोदोओं को
करण	कोदोसे	कोदोओंसे

संप्रदान	कोदो को, के लिये	कोदोओं को, के लिये
अपादान	कोदो से	कोदो ओं से
संबन्ध	कोदो का, की-के	कोदो ओं का, की, के
अधिकरण	कोदो में, पै, पर	कोदो ओं में, पै, पर
संबोधन	हे कोदो	हे कोदो ओं ।

सर्वनामों के कारक के उदाहरण

प्रथम (अन्य) पुरुष, वह ।

	एक०	बहु०
कर्ता	वह, उसने	वे, उनने, उन्हों ने
कर्म	उसको, उसे	उनको, उन्हें, उन्हों को
करण	उससे	उनसे, उन्हों से
संप्रदान	उसको, उसे, उसके लिये	उनको, उन्हें, उन्हों को, उनके लिये
अपादान	उससे	उनसे, उन्हों से
संबन्ध	उसका, की, के	उनवा उन्हों का, की, के
अधिकरण	उसमें	उन वा उन्हों में ।
संबोधन[1]	०	०

१ सर्वनाम शब्दों का संबोधन नहीं होता ।

मध्यमपुरुष तू ।

	एक	बहु०
कर्ता	तू, तूने	तुम, तुमने
कर्म	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हे
करण	तुझसे	तुमसे
संप्रदान	तुझको, तुझे, तेरेलिये	तुमको, तुम्हें, तुम्हारेलिये
अपादान	तुझसे	तुम से
संबन्ध	तेरा, री, रे	तुह्मारा, री, रे
अधिकरण	तुझमें, तेरेमें	तुम में, तुह्मारे में ।

उत्तम पुरुष मैं ।

	एक०	बहु०
कर्ता	मै, मैंने	हम, हमने
कर्म	मुझको, मुझे	हमको, हमे
करण	मुझसे	हमसे
संप्रदान	मुझको, मुझे, मेरेलिये	हमको, हमें, हमारेलिये
अपादान	मुझसे	हमसे
सम्बन्ध	मेरा, री, रे	हमारा, री, रे
अधिकरण	मुझ में, मेरे में	हममें, हमारे में ।

यह ।

	एक०	बहु०
कर्ता	यह, इसने	ये, इनने, इन्होंने
कर्म	इसको, इसे	इनको, इन्हें
करण	इससे	इनसे, इन्हों से
संप्रदान	इसको, इसे, इसकेलिये	इनको, इन्हें, इन के लिये
अपादान	इससे	इनसे, इन्हों से
संबन्ध	इसका, की, के	इन वा इन्हों का, की, के
अधिकरण	इस में	इन वा इन्हों में ।

कोई[1] ।

कर्ता	कोई, किसी ने
कर्म	किसी को
करण	किसी से
संप्रदान	किसी को
अपादान	किसी से
संबन्ध	किसी का, की, के
अधिकरण	किसी में ।

१ इसका बहुवचन नहीं होता ।

आप ।

	एक०
कर्ता[१]	आप
कर्म	अपने को
करण	अपने से
संप्रदान	अपने को, अपने लिये
अपादान	अपने से
सम्बन्ध	अपना, नी, ने
अधिकरण	अपने में ।

आदर प्रदर्शक आप ।

	एक०
कर्ता	आप, आपने
कर्म	आप को
करण	आप से
संप्रदान	आप को
अपादान	आप से
सम्बन्ध	आप का, की, के
अधिकरण	आप में ।

१ इसका बहुवचन नहीं होता ।

कौन ।

	एक०	बहु०
कर्त्ता	कौन, किसने	कौन वा किनने
कर्म	किसको, किसे	किनको, किन्हें
करण	किस से	किनसे
संप्रदान	किसको, किसे	किनको, किन्हे
अपादान	किससे	किनसे
सम्बन्ध	किसका, की, के	किनका, की, के
अधिकरण	किसमें	किनमें ।

जौन ।

	एक०	बहु ।
कर्त्ता	जो, जिसने	जो, जिनने
कर्म	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्हें
करण	जिससे	जिनसे, जिन्हों से
संप्रदान	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्हें
अपादान	जिससे	जिनसे, जिन्हों से
सम्बन्ध	जिसका, की, के	जिन वा जिन्हों का, की, के
अधिकरण	जिस में	जिन में ।

तृतीय अध्याय ।

विशेष्य, विशेषण ।

जो किसी के गुण की प्रशंसा करे वह विशेषण और जिसके गुण की प्रशंसा की जाय वह विशेष्य कहाता है । विशेष्य विशेषण के लिङ्ग, वचन, कारक समान होते हैं । जैसे सुन्दर लडका आता है । सुन्दर यह विशेषणं और लडका यह विशेष्य है । वाक्यों में केवल विशेषण का प्रयोग नहीं हो सक्ता जैसे सुन्दर आता है ऐसा नहीं हो सक्ता परन्तु कहीं २ केवल विशेषण का भी प्रयोग होता है । जैसे ज्ञानियों को दयाशील होना चाहिये । वास्तव में यहां मनुष्य का अध्याहार है ।

यदि पुल्लिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो प्रधान कर्ता और कर्मके एक वचन को छोड शेष कारकों के एकवचन और बहुवचन में आ को ए हो जाता है । जैसे लंबे मनुष्यों को । छोटे फल से इत्यादि ।

यदि स्त्रीलिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो सब कारकों में उनको स्त्रीलिङ्ग बना देना चाहिये जैसे मोटी रस्सी, बडी गाय इत्यादि ।

जब विशेषण विशेष्य के साथ आता है तब उसमें कारक या वचन के चिन्ह नहीं रहते किन्तु जब केवल विशेषणही का प्रयोग होता है तब कारक, वचन के चिन्ह विशेषण के आगे आते हैं। जैसे मोटियां रस्सियां नहीं होता पर ज्ञानियों को मानो ऐसा होता है क्योंकि यहां ज्ञानी इस विशेषणहीका केवल प्रयोग हुआ है इस लिये उसके आगे बहुवचन तथा कर्म कारक का चिन्ह आता है।

चतुर्थ अध्याय ।

कारकों के नियम ।

कर्त्ता ।

जहां केवल संज्ञा के अर्थ की उपस्थिति नियम पूर्वक हो अथवा लिङ्ग, संख्या या परिमाण का प्रकाश करना हो अथवा उद्देश्यविधेयभाव हो वहां कर्त्ता कारक होता है जैसे——मनुष्य, घोड़ा, घोड़ी, दो सेर चीनी, दस हजार, पांच हजार, विद्या सबसे उत्तम धन है इत्यादि ।

कर्म ।

क्रिया के व्यापार का फल जहां अनुक्त रहता है। अर्थात् किसी से बोधित नहीं रहता वहां कर्म कारक

होता है । जैसे महाभारत को पढ़ता है, पक्षियों को मारता है इत्यादि ।

और जहां वाक्य में कर्म नहीं रहता और अन्य कारकों की विवक्षा नहीं रहती वहां अन्य कारकों की जगह कर्म कारक होता है, जैसे अहीर गाय को दुहता है यहां अहीर गाय से दूध को दुहता है ऐसा तात्पर्य्य रहने पर भी गाय शब्द में अपादान कारक की विवक्षा न होने से कर्म कारक ही हुआ ।

करण ।

मूल्य वाचक शब्दों से कारण इत्यादि शब्द के योग में और जहां कर्ता उक्त नहीं रहता वहां और जिससे कोई वस्तु उत्पन्न हो उससे करणकारक होता

---

१ कई जगह कर्म कारक के चिन्ह 'को' का लोप भी करदेते हैं । इसका कोई विशेष नियम नहीं है केवल लोकही इसमे प्रमाण हैं जैसे हम फल खाते हैं, तुम काम करते हो इत्यादि प्रयोग में 'को' का तो लोप करते हैं और रामा को पुकारो, घोडे को मारो इत्यादि प्रयोग में 'को' का लोप नहीं करते ।

जहां एकही वाक्य में कर्म और संप्रदान दो कारक आते हैं वहां मात्र को का लोप नियम से होता है जैसे भूखों को भिक्षादो । यहां को का लोप कभी नहीं हो सक्ता ।

है। जैसे दो हजार रुपयों से हाथी मोल लिया। इस हेतु से या इस कारण से वह मारा गया। मुझ से यह नहीं होसक्ता। तुम से अब पढ़ा नहीं जासक्ता। विद्या से प्रतिष्ठा और धन दोनों मिलते हैं।

सम्प्रदान।

जिसको कुछ दिया जाता है या जिसके लिये कुछ किया जाता है वहां और कहीं योग्यता, औचित्य, आदर, आवश्यकता आदि प्रकाश करने में सम्प्रदान होता है जैसे लड़कों को मिठाई दो। आपके लिये यह करता हूं। उसको यह करना योग्य नहीं है। आप लोगों को क्षमा करना ही उचित है। आपको नमस्कार पिताजी को दण्डवत्। रामदत्त को प्रयाग जाना होगा।

अपादान।

जहां बहुत वस्तुओं में से एक का निश्चय करना हो वहां अपादान कारक होता है अपादान कारक का चिन्ह 'से' अधिकरण कारक के चिन्ह 'में' से

१ करण चिन्ह 'से' न रहने पर भी काम चल सकता है जैसे इस हेतु या इस कारण वह मारा गया।

आगे आता है । जैसे नाटकों में से शकुन्तला सर्वोत्तम है । इन में से पण्डितों को लाओ ।

आगे, परे, भिन्न, परिचय भेट इत्यादि शब्दों के योग में अपादान कारक होता है । जैसे वह मुझसे आगे है । समुद्र से परे कुछ नहीं है । यह किताब उस से भिन्न है । रामदत्त से मेरा परिचय नहीं है । मेरे मित्रसे आज भेट हुई ।

जहां किसी के गुण आदि की तुलना करनी हो वहां भी अपादान कारक होता है । जैसे गोपाल से रामा अच्छा है । अर्थात् रामा के गुण गोपाल से अच्छे हैं ।

सम्बन्ध ।

कार्यकारणभाव, कर्तृकर्मभाव, सेव्यसेवकभाव, जन्यजनकभाव और अङ्गाङ्गीभाव में सम्बन्ध कारक होता है । जैसे बालू की दीवार, चांदी का पानदान, पतञ्जलि का महाभाष्य, कालिदास का रघुवंश, राजा की सेवा, गोविन्ददास का लड़का, सिरके बाल, रामाका हाथ इत्यादि ।

तुल्य, सदृश, समान, अधीन आदि शब्दोंके योग में सम्बन्ध कारक होता है । जैसे वह पिता के तुल्य

पण्डित है। उस स्त्री का मुख चन्द्रमा के सदृश है। पृथ्वी नरंगी के समान है। स्त्री को पति के अधीन रहना चाहिये।

परिमाण, मूल्य, काल, वय, योग्यता, समस्तता, भेद, सामीप्य आदि प्रकाश करने में भी सम्बन्ध कारक होता है। चार हाथ का बेंत, चार रुपये की पोथी, दो दिन की छुट्टी, बारह बरस का लड़का, पढ़ने के योग्य पुस्तक, जल और तेज का भेद, प्रयाग के समीप इत्यादि।

अधिकरण।

क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं वहां अधिकरण कारक होता है जैसे वह शाला में है। पेड़ पर फल लगे हैं। वह थाली में पकाता है। सब वस्तु में आत्मा है।

जहां अनेक में एक का निश्चय होता है वहां भी अधिकरण कारक होता है। जैसे पशुओं में हाथी बड़ा जानवर हैं। प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है।

हेतु के प्रकाश करने में अपादान या अधिकरण (वक्ता की इच्छानुसार) कारक होते हैं जैसे ऐसी

युक्ति करो कि जिसमें वह छकजाय अथवा जिस से वह छकजाय ।

सम्बोधन ।

सम्बोधन का अर्थ चिताना है सम्बोधनसे मध्यम पुरुष होता है जैसे रे देवदत्त तू आ। तात्पर्य यह कि सम्बोधन मध्यम पुरुष के लिये आता है इस में कर्ता अवश्य ही प्राणी होना चाहिये पर कहीं २ कवि लोग अप्राणि के लिये भी सम्बोधन का प्रयोग कर लेते हैं अर्थात् वे अप्राणिमें प्राणित्व का आरोप करते हैं, जैसे हे पर्वत, हे पृथ्वी इत्यादि ।

पंचम अध्याय ।

अव्यय ।

अव्यय उसे कहते हैं जिसमें लिङ्ग, वचन, कारक आदि से कुछ विकार नहीं होता अर्थात् जिसका स्वरूप हमेशः एकसाही रहता है जैसे अब, फिर इत्यादि ।

अव्यय के छः भेद हैं । क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, उपसर्ग, संयोजक, विभाजक और विस्मयादिबोधक ।

क्रियाविशेषण ।

क्रियाविशेषण अव्यय वह है जिसमें क्रिया का विशेष, काल, रीति आदिका बोध हो । यह चार प्रकार का है । कालवाचक, स्थानवाचक, भाववाचक और परिमाणवाचक ।

कालवाचक ।

अब	शाम	पश्चात्
तब	प्रातः	बारंबार
जब	सुबः	तुरन्त
कल	तरसों	सर्वदा
फिर	परसों	कल
सदा	निदान	एकबार इत्यादि ।

स्थानवाचक ।

यहां	तहां	समीप
वहां	इधर	पास
जहां	उधर	दूर
कहां	किधर	तिधर इत्यादि ।

भाववाचक ।

अचानक	तथापि	नहीं
अर्थात्	वृथा	मत

केवल	सचमुच	मानो
झटपट	हां	स्वयम्
ठीक	भी	न इत्यादि ।

परिमाणवाचक ।

अत्यन्त	कुछ	एकबेर
अधिक	प्रायः	इत्यादि-इत्यादि ।

सम्बन्ध बोधक ।

जो वाक्य के एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ संबन्ध बोधन करते हैं उन्हें संबन्ध बोधक कहते हैं । जैसे आगे, पीछे, सङ्ग, साथ, भीतर, बदले, तुल्य, नीचे, ऊपर इत्यादि ।

उपसर्ग ।

उपसर्गों का केवल का प्रयोग नहीं होता ये किसी न किसी के साथ ही रहते हैं अभीतक ठेठ हिन्दी में इनके रूप बने हुए नहीं दिखाते संस्कृत में जो प्र, परा, अप आदि उपसर्ग हैं वेही हिन्दी में हैं । किसी २ शब्द में इनका योग होने से विपरीत ही अर्थ होता है । जैसे जय, पराजय ।

संस्कृत में प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्,

अभि, प्रति, परि, उप, कु इत्यादि उपसर्ग हैं इनके अर्थ हमारे बनाये हुए संस्कृतसोपान में लिखे हैं ।

संयोजक, विभाजक ।

जो शब्द दो पदों, वाक्यो वा वाक्यखण्डों के मध्य में आते हैं और अन्वयका संयोग अथवा विभाग करते हैं उन्हे संयोजक और विभाजक कहते हैं । जैसे-

संयोजक		विभाजक	
और	यथा	अथवा	क्या
यदि	एवं	परन्तु	किन्तु
अथ	भी	चाहे	जो
कि	पुनः	पर	वा
सो	फिर		इत्यादि ।

विस्मयादिबोधक ।

विस्मयादि बोधक अव्यय उसे कहते हैं जिससे अन्तःकरण का कुछ भाव या दशा प्रकाशित होती है । जैसे---आह, अहह, अहा, ओहो, हाय, प्यारे, धन्य-धन्य, वाह वाह, जय जय, छी छी, धिक्, दूर, फिश्, हश् इत्यादि ।

षष्ठअध्याय ।

समास ।

कहीं २ दो तीन वा अधिक पद अपने २ विभक्तियों को छोड़ एकत्र मिल जाते हैं और उनसे एक बड़ा शब्द बनता है इसको समास कहते हैं। जैसे 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' इसमें काशी*नागरी*प्रचारिणी*सभा ये चार शब्द अपनी २ विभक्तियों को छोड़ एकत्रित हुए हैं यदि ये शब्द विभक्ति सहित कहे जांय तो काशी की नागरी का प्रचार करने वाली सभा ऐसा कहा जायगा इसलिये 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' यह समास हुआ। इसी तरह 'दयानिधि' 'राजराज' इत्यादिक शब्द जानो।

समास के छः भेद हैं । अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि और द्वन्द्व ।

जहां अव्यय के साथ किसी शब्द का योग हुआ हो उसे अव्ययीभाव कहते हैं। जैसे, अतिकाल, यथाशक्ति, प्रतिदिन इत्यादि ।

जहां पहिला पद कर्म आदि कारक विभक्तियोंसे युक्त हो और दूसरा पद मुख्यार्थक हो वहां तत्पुरुष

होता है ' जैसे पृथ्वीपति, पाठशाला इत्यादि ।

जहां विशेष्य विशेषणों का अभेद हो वहां कर्मधारय होता है । जैसे—सच्छात्र—अच्छा छात्र, नीलघट—नीला घड़ा ।

जहां पहला पद संख्यावाचक हो और आगे का चाहे जैसा हो उसे द्विगु कहते हैं । जैसे नवरत्न, त्रिभुवन इत्यादि ।

जहां कई एक पद एकत्र मिले हों और उनसे किसी अन्य पदार्थ का बोध होता हो उसे बहुव्रीहि कहते हैं । जैसे चतुर्भुज, यहां चतुर् (चार) भुज ये दो पद एकत्रित हैं और इस से अन्य पदार्थ विष्णु का बोध होता है । चन्द्रशेखर, दशानन इत्यादि उदाहरण भी इसी तरह जानो ।

जिन पदों से समास होता है उन सब पदों का एकही क्रिया में अन्वय हो तो उसे द्वन्द्व कहते हैं । रातदिन, गुरुशिष्य, मातापिता इत्यादि ।

सप्तम अध्याय ।

क्रिया ।

क्रिया उसको कहते हैं जिसका मुख्य अर्थ

'करना' है वह काल, पुरुष और वचन से नित्य सम्बन्ध रखती है।

क्रिया के मूल को धातु कहते हैं। धातु दो प्रकार के हैं एक सिद्ध दूसरा अनुकरण । करना, बोलना इत्यादि सिद्ध धातु है । हिनहिनाना, दन्दनाना, चिंघारना इत्यादि अनुकरण हैं।

धातु का चिन्ह भाषा में 'नो' है अर्थात् जिस शब्द के अन्त में 'ना' हो और उसका अर्थ व्यापार हो वही धातु समझो। जैसे खाना, पीना, सोना इत्यादि।

क्रिया दो प्रकार की होती है, एक सकर्मक दूसरी अकर्मक। जहां क्रिया करने में कर्ता के व्यापार का फल दूसरे में रहे उसे सकर्मक कहते हैं। जिस में व्यापार का फल होता है उसे कर्म कहते हैं। जैसे कुम्हार बासन बनाता है यहां कुम्हार कर्ता है उसका व्यापार मिट्टी बनाना, चाक घुमाना इत्यादि है उसका फल बासन का बनाना है सो बासन में है इस लिये बासन कर्म है और बनाना यह सकर्मक क्रिया है।

---

१ कोना इस शब्द के अन्त में 'नो' है परन्तु इसका व्यापार अर्थ नहीं है इसलिये धातु नहीं है।

जहां कर्ता का व्यापार और फल दोनों कर्ता ही में रहे वह अकर्मक क्रिया कहाती है। जैसे देवदत्त उठता है यहां देवदत्त कर्ता के उठने का व्यापार और उसका फल उठना ये दोनों देवदत्त ही में है इसलिये उठना यह अकर्मक क्रिया हुई।

सकर्मक क्रिया भी दो प्रकार की है एककर्मक और द्विकर्मक। खाना यह एककर्मक है क्योंकि इस का एक ही कर्म होसक्ता है जो कि खाया जाता है। परन्तु लेजाना इत्यादि द्विकर्मक है अर्थात् इसके दो कर्म हैं एक तो वह वस्तु जिसको लिवा जाते हैं और दूसरा वह जहां लेजाता है।

सकर्मक क्रिया के और भी दो भेद हैं एक कर्तृप्रधान दूसरी कर्मप्रधान। जिस क्रिया के लिङ्ग वचन कर्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार होते हैं उसे कर्तृप्रधान कहते हैं और जिस क्रिया के लिङ्ग वचन कर्म के लिङ्ग वचन के अनुसार होते हैं उसे कर्मप्रधान कहते हैं। जैसे--

कर्तृप्रधान—	कर्मप्रधान—
दर्जी कपड़ा सीता है।	कपड़ा सीया जाता है।
लड़के पढ़ते हैं।	लड़के पढ़ाये जाते हैं।

यदि कर्मप्रधान के सङ्ग कर्ता की आवश्यकता हो तो उसे करणकारक के चिन्ह (से) के साथ लाना चाहिये । जैसे बाली रामसे मारा गया । हम से यह नहीं किया जाता इत्यादि ।

कहीं अकर्मक क्रिया का रूप कर्मप्रधान के समान मिलता है और धातु अकर्मक होने से कर्मप्रधान का तो सम्भव न हो वहां उसे भावप्रधान समझो जैसे रातभर किसी से नहीं जागा जाता, बिना खाये तुम से नहीं रहा जाता, बिना काम किसी से बैठा जाता है ? इत्यादि ।

इस से यह बात सिद्ध हुई की जहां कर्ता में प्रत्यय होता है वह कर्तृप्रधान, जहां कर्म में प्रत्यय होता है वह कर्मप्रधान और जहां भाव में प्रत्यय होता है वह भावप्रधान, इसी को कोई लोग कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य भी कहते हैं ।

क्रिया के और भी तीन भेद हैं विधिक्रिया, पूर्वकालिका क्रिया और सम्भावनार्थ क्रिया ।

विधिक्रिया उसे कहते हैं जिस से आज्ञा समझी जाय । जैसे मैं होऊं ।

पूर्वकालिका क्रिया से लिङ्ग, वचन, पुरुष का

बोध नहीं होता और उसका काल दूसरी क्रिया से बोधित होता है। जैसे होके, होकर इत्यादि।

सम्भावनार्थ क्रिया से सम्भव बोधित होता है।

पहिले कह आये हैं क्रिया का काल के साथ नित्य सम्बन्ध रहता है इस काल के मुख्य तीन भेद हैं वर्तमान, भूत और भविष्यत्।

वर्तमान कालिक क्रिया वह है जिसका प्रारम्भ हो चुका हो परन्तु समाप्ति न हुई हो जैसे वह लिखता है, हम देखते हैं इत्यादि।

भूत कालिक क्रिया वह है जिसकी समाप्ति हो चुकी हो जैसे—तुमने कहा, मैंने सुना, हमने पूछा, उसने उत्तर दिया इत्यादि।

भविष्यत् कालिक क्रिया वह है जिसका प्रारंभ न हुआ हो, अर्थात् होने वाली क्रिया को भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं जैसे मैं पढ़ूंगा, वे आवेंगे इत्यादि।

वर्तमान कालिक क्रिया के दो भेद हैं सामान्य वर्तमान और सन्दिग्ध वर्तमान। सामान्य वर्तमान क्रिया से जाना जाता है की कर्ता क्रिया को उसी समय कर रहा है। जैसे वह लिखता है और सन्दिग्ध वर्तमान क्रिया से वर्तमान कालिक क्रिया का सन्देह जाना

जाता है । जैसें वह खेलता होवेगा ।

भूत कालिक क्रिया के छः भेद हैं । हेतुहेतुमद्भूत, अपूर्णभूत, सामान्यभूत, पूर्णभूत, आसन्नभूत और संदिग्धभूत ।

हेतुहेतुमद्भूत क्रिया वहां आती है जहां कार्य और कारण का फल भूत काल का कहना हो ।

अपूर्णभूत उसे कहते हैं जिसमें भूतकाल तो पाया जाय परन्तु क्रिया पूर्ण न हो गई हो ।

सामान्यभूत उसे कहते हैं जिससे क्रिया की तो पूर्णता पाई जाय परन्तु भूतकाल की विशेषता न पाई जाय ।

पूर्णभूत उसे कहते हैं जिसमें क्रिया की भी समाप्ति हो गई हो और उससे भूतकाल भी पाया जाया ।

आसन्नभूत क्रिया से वर्तमान के पास का भूतकाल जाना जाता है ।

संदिग्धभूत क्रिया से किई हुई क्रिया में सन्देह कहा जाता है । इनके उदाहरण आगे लिखेंगे ।

भविष्यत् कालिक क्रिया दो प्रकार की है एक सामान्य भविष्यत् जिसका लक्षण पहिले कह आये हैं दूसरी सभाव्य भविष्यत् जिससे भविष्यत् काल और

किसी बात की इच्छा जानी जाती है । उदाहरण आगे लिखे हैं ।

बहुधा क्रिया ओं में था, हूं है, होऊं, होवें, होवें हो, ये होना धातु के रूप आते हैं इनका केवल का भी सत्ता बोधन करने के लिये प्रयोग होता है । हैं, हूं, है इत्यादि से वर्तमान कालिक सत्ता, था, थे इत्यादि से भूत कालिक सत्ता जानी जाती है ।

वाक्य में क्रिया के रूप बहुधा कर्ता के अनुसार होते हैं अर्थात् कर्ता एकवचनी हो तो क्रिया में भी एकवचन होता है, कर्ता बहुवचनी हो तो क्रिया भी बहुवचनान्त होती है । एवं कहीं २ कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया के रूप भी बदलते हैं जैसे वह (स्त्री) लाती है, वह (पुरुष) लाता है इत्यादि ।

मैं, हम, ये कर्ता हो तो उत्तम पुरुष की. तू, तुम कर्ता हो तो मध्यम पुरुष की, और इनसे अन्य कोई कर्ता हो तो अन्य पुरुष की क्रिया कहाती है ।

अब पाठकों के अभ्यासार्थ कुछ धातुओं के सब कालो में उदाहरण लिखते हैं ।

होना (अकर्मक धातु)

वर्तमान क्रिया ।

पुरुष कर्ता

	एक०	बहु०
उत्तमपुरुष	मैं होता हूं	हम होते हैं
मध्यमपुरुष	तू होता है	तुम होते हो
अन्यपुरुष	वह होता है	वे होते हैं ।

स्त्री कर्ता

उ०	मैं होती हूं	हम होती हैं
म०	तू होती है	तुम होती हो
अ०	वह होती है	वे होती हैं ।

हेतुहेतुमद्भूतक्रिया ।

उ०	मैं होता	हम होते
म०	तू होता	तुम होते
अ०	वह होता	वे होते ।

स्त्री कर्ता

उ०	मैं होती	हम होतीं
म०	तू होती	तुम होतीं
अ०	वह होती	वे होतीं ।

पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं होता था	हम होते थे
म०	तू होता था	तुम होते थे
अ०	वह होता था	वे होते थे

स्त्री

उ०	मैं होती थी	हम होती थीं
म०	तू होती थी	तुम होती थी
अ०	वह होती थी	वे होती थीं

सामान्यभूत क्रिया

पुरुष

उ०	मैं हुआ	हम; हुए
म०	तू हुआ	तुम हुए
अ०	वह हुआ	वे हुए

स्त्री

उ०	मैं हुई	हम हुईं
म०	तू हुई	तुम हुईं
अ०	वह हुई	वे हुईं

पूर्णभूत क्रिया

पुरुष

उ०	मैं हुआ था	हम हुए थे

	एकवचन	बहुवचन
म०	तू हुआ था	तुम हुए थे
अ०	वह हुआ था	वे हुऐ थे

स्त्री

उ०	मैं हुई थी	हम हुई थीं
म०	तू हुई थी	तुम हुई थीं
अ०	वह हुई थी	वे हुई थीं

आसन्न भूत क्रिया

पुरुष

उ०	मैं हुआ हूं	हम हुए हैं
म०	तू हुआ है	तुम हुए हो
अ०	वह हुआ है	वे हुए हैं

स्त्री

उ०	मैं हुई हूं	हम हुई हैं
म०	तू हुई है	तुम हुई हो
अ०	वह हुई है	वे हुई हैं

संदिग्धभूत क्रिया

पुरुष

उ०	मैं हुआ होऊं	हम हुए हों
म०	तू हुआ हो	तुम हुए हो

	एकवचन	बहुवचन
अ०	वह हुआ हो	वे हुए हों
	स्त्री	
उ०	मैं हुई होऊं	हम हुई हों
म०	तू हुई हो	तुम हुई हो
अ०	वह हुई हो	वे हुई हों

विधि क्रिया

पुरुष स्त्री कर्ता

उ०	तू हो	तुम हो

सम्भावनार्थ क्रिया

पुरुष स्त्री कर्ता

उ०	मैं होऊं	हम होवें
म०	तू होवे	तुम हो
अ०	वह होवे	वे होवें

सामान्य भविष्यत् क्रिया ।

पुरुष

उ०	मैं हूंगा	हम होंगे
म०	तू होगा	तुम होंगे
अ०	वह होगा	वे होंगे
	स्त्री	
उ०	मैं होऊंगी	हम होंगी

	एकवचन	बहुवचन
म०	तू होगी	तुम होगी
अ०	वह होगी	वे होंगी

सम्भाव्य भविष्यत् क्रिया

पुरुष स्त्री कर्ता

उ०	मैं हूं	हम हों
म०	तू हो	तुम हो वा हो ओ
अ०	वह हो	वे हों

पूर्वकालिका क्रिया

होके होकर होकरके

करना (सकर्मक)

वर्त्तमान क्रिया

पुरुष कर्ता

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मै करता हूं	हम करते हैं
म०	तू करता है	तुम करते हो
अ०	वह करता है	वे करते हैं

स्त्री कर्ता

उ०	मैं करती हूं	हम करतीं हैं
म०	तू करती है	तुम करती हो
अ०	वह करती है	वे करती हैं

हेतुहेतुमद्भूतक्रिया।

पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं करता	हम करते
म०	तू करता	तुम करते
अ०	वह करता	वे करते

स्त्री

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं करती	हम करतीं
म०	तू करती	तुम करतीं
अ०	वह करती	वे करतीं

अपूर्णभूत क्रिया।

पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं करता था	हम करते थे
म०	तू करता था	तुम करते थे
अ०	वह करता था	वे करते थे

स्त्री

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं करती थी	हम करती थीं
म०	तू करती थी	तुम करती थीं
अ०	वह करती थी	वे करती थीं

सामान्यभूत क्रिया

पुरुष कर्म

उ० मैंने वा हमने	मैंने वा हमने	
म० तू वा तुमने	किया, तूने, तुमने	किये
अ० उसने वा उन्होंने	उसने वा उन्होंने	

स्त्री कर्म

उ० मैंने वा हमने	मैंने वा हमने	
म० तूने वा तुमने	की, तूने वा तुमने	की
अ० उसने वा उन्होंने	उसने वा उन्होंने	

पूर्णभूत क्रिया

पुरुष कर्म

उ० मैंने, हमने	मैंने, हमने	
म० तूने	कियाथा तूने, तुमने	किये
अ० उसने, उन्होने	उसने, उन्होंने	थे

स्त्री कर्म

उ० मैंने, हमने	मैंने, हमने	
म० तूने, तुमने,	कीथी, तूने, तुमने	कीथीं
अ० उसने, उन्होंने	उसने, उन्होंने	

आसन्नभूत क्रिया

पुरुष कर्म

उ० मैंने, हमने	मैंने, हमने,	किये
म० तूने, तुमने	किया है, तूने, तुमने	
अ० उसने, उन्होंने	उसने, उन्होंने	हैं

स्त्री कर्म

उ० मैंने, हमने	मैंने, हमने	की
म० तूने, तुमने	की है, तूने, तुमने	
अ० उसने, उन्हाने	उसने,उन्होंने	हैं

सन्दिग्धभूत क्रिया

पुरुष कर्म

उ० मैंने, हमने	मैंने, हमने	किये
म० तूने, तूमने	कियाहो, तूने, तुमने	
अ० उसने, उन्होंने	उसने, उन्होंने	हों

स्त्री कर्म

उ० मैंने, हमने	मैंने, हमने	की
म० तूने, तुमने	कीहो, तूने, तुम ने	
अ० उसने, उन्होंने	उसने, उन्होंने	हों

विधि क्रिया

पुरुष स्त्री

तू कर तुम करो

सम्भावनार्थ क्रिया

पुरुष स्त्री

उ० मैं करूं हम करें
म० तू करे तुम करो
अ० वह करे वे करें

सामान्य भविष्यत् क्रिया

पुरुष कर्त्ता

उ० मैं करूंगा हम करेंगे
म० तू करेगा तुम करोगे
अ० वह करेगा वे करेंगे

स्त्री कर्ता

उ० मैं करूंगी हम करेंगी
म० तू करेगी तुम करोगी
अ० वह करेगी वे करेंगी

सम्भाव्य भविष्यत् क्रिया

पुरुष कर्त्ता

उ० मैं करूं हम करें
म० तू कर तुम करो
अ० वह करे वे करें

पूर्वकालिका क्रिया

करके करकर करकर के

ऊपर कहे हुए उदाहरण कर्तृवाच्य के हैं कर्मवाच्य में कर्त्ता प्रगट नहीं रहता किन्तु कर्मही कर्त्ता के रूप से आता है उसके बनाने की रीति यह है कि मुख्य धातु को सामान्य भूत क्रिया के आगे जाना इसके रूपों को काल, पुरुष, लिङ्ग और वचन के अनुसार रक्खो । जैसे, वर्तमान में—मैं देखा जाता हूं इत्यादि । हेतुहेतुमद्भूत में—मैं देखा जाता, वह देखा जाता, तुम देखे जाते, वह देखी जाती इत्यादि । अपूर्णभूत में—मैं देखा जाता था, तुम देखे जाते थे, वह देखी जाती थी, तुम देखी जाती थीं इत्यादि । सामान्यभूत में—मैं देखा गया, वह देखा गया, वह देखी गई, वे देखे गये इत्यादि । पूर्णभूत में—मैं देखा गया था, वह देखी गई थी, तुम देखे गये थे इत्यादि । आसन्नभूत में—वह देखा गया है, मैं देखी गई हूं, तुम देखे गये हो इत्यादि। सान्दिग्धभूत में—मैं देखा गया होऊंगा, वे देखे गये होंगे । तू देखी गई होगी इत्यादि ।

हिन्दी में वर्तमान और भविष्यत् कालिका क्रिया बनाने में कुछ २ नियम होसक्ते हैं, जैसे वर्तमान कालिका क्रिया बनाने में धातु के आगे 'हैं' 'हो' इत्यादि रूप लगते हैं एवं भविष्यत् कालिक क्रिया बनाने में 'गे'

'गा' इत्यादि धातु के आगे लगते हैं परन्तु भूतकालिक क्रिया बनाने में संस्कृत के सदृश ही कठिनाई है कोई ठीक नियम नहीं हो सक्ता कहीं २ तो कुछ २ शब्द सा-म्य रहता है जैसे करना = किया, देना = दिया, पीना = पिया, लेना = लिया, होना = हुआ इ० परन्तु जाना = गया इत्यादि क्रिया में एक भी अक्षर नहीं मिलता ।

आदरमें भी विधिक्रिया ही का प्रयोग होता है परन्तु रूप कुछ भिन्न रीति से बनते हैं जैसे करना कीजिये, देना दीजिये, लिखना लिखिये, पीना पीजिये, जाना जाइये, लेना लीजिये इत्यादि । प्रायः आदर विधि में अन्त में ये आता है ।

पहिले कहा है कि क्रिया दो प्रकार की होती है एक सकर्मक दूसरी अकर्मक । अब क्रिया का और भी एक भेद कहा जाता है जिसे प्रेरणार्थक कहते हैं कहीं २ अकर्मक क्रिया के (धातु के) अंत्यव्यञ्जन से आ मिला देने से सकर्मक क्रिया होती है जैसे उड़ना [अक०] उड़ाना [सक०] ।

अकर्मक का प्रेरणार्थक बनाना हो तो वा मिला दीजिये । जैसे उड़ना उड़वाना ।

कुछ अकर्मक से सकर्मक और प्रेरणार्थक के उदाहरण नीचे दिये हैं ।

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
लगना	लगाना	लगवाना
बजना	बजाना	बजवाना
दबना	दबाना	दबवाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
चढना	चढाना	चढवाना
लटकना	लटकाना	लटकवाना
पिघलना	पिघलाना	पिघलवाना

यदि दो अक्षर का अकर्मक धातु हो और उसके बीचमें दीर्घस्वर हो तो उसे ह्रस्व करके आ और वा मिला देनेसे सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया बनतीं हैं जैसे

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
घूमना	घुमाना	घुमवाना
लेटना	लिटाना	लिटवाना
जीतना	जिताना	जितवाना

कई एक धातु ऐसे हैं जिनके स्वर को ह्रस्व करके ला और लवा लगाने से द्विकर्मक और प्रेरणार्थक बनते हैं जैसे–

सकर्मक	द्विकर्मक	प्रेरणार्थक
पीना	पिलाना	पिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना

कहीं २ धातु के प्रथम स्वर को दीर्घ करनेसे सकर्मक बनता है और प्रेरणार्थक बनाने में केवल वा लगता हैं। जैसे-

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
गडना	गाडना	गडवाना
मरना	मारना	मरवाना
कटना	काटना	कटवाना

कोई २ धातु तो ऐसे हैं कि जिनके सकर्मक या प्रेरणार्थक बनाने में कोई नियम ही नहीं है किन्तु प्रयोग से ही समझना पडता है। जैसे-

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
छूटना	छोडना	छुडवाना
फूटना	फोडना	फुडवाना
रहना	रखना	रखवाना

आना, जाना, सकना आदि क्रिया ओं के प्रेरणार्थक वगैरः नहीं वेनते।

संयुक्त क्रिया।

हिन्दी में एक संयुक्त क्रिया कहाती है। जिसमें दो तीन क्रिया मिली रहती है। जैसे—

देख आना, चलदेना, पढ़लेना, रखदेना, खाजा-

ना, चढ़सकना, लिखसकना, देखचुकना, आयाजा-
याकरना इत्यादि ।

अष्टम अध्याय ।

धातु से केवल क्रिया ही नहीं बनती किन्तु कर्तृ-
वाचक, कर्मवाचक, भाववाचक, और क्रियाद्योतक ये
चार संज्ञा भी निकलती हैं ।

कर्तृवाचक संज्ञा ।

धातु के आगे वाला या हारा लगाकर धातु के
चिन्ह ना के आ को ए करदेने से कर्तृवाचक संज्ञा
बनती है । जैसे करनेवाला । करनेहारा । स्त्री होतो
करनेवाली, करनेहारी इत्यादि ।

कर्मवाचक संज्ञा ।

सकर्मक धातु की सामान्यभूत क्रिया ही कर्मवाचक
संज्ञा होती है जैसे किया किई । मारा, मारी । अथवा
सामान्यभूत क्रिया के आगे हुआ लगादेने से वह सिद्ध
होती है । जैसे किया हुआ, की हुई इत्यादि ।
यद्यपि कर्मवाचक संज्ञा का रूप क्रिया के सदृश दीखता
है तथापि वह क्रिया नहीं है किन्तु संज्ञा है ।

भाववाचक संज्ञा ।

बहुधा धातु के चिन्ह ना का लोप करने से जो शेष रहता है वही भाववाचक संज्ञा है जैसे मार, पीट, लूट इत्यादि । यह संज्ञा भी धातुका अर्थ देती है जो लूट का अर्थ है वही लूटने का भी है ।

कहीं २ धातु के ना का स्वर दूर करने से भी भाववाचक संज्ञा बनती है जैसे लेन, देन, खान, पान इत्यादि ।

क्रियाद्योतक संज्ञा ।

हेतुहेतुमद्भाव की क्रिया के तुल्य क्रियाद्योतक संज्ञा होती है जैसे होता, करता, और उसके आगे हुआ लगादेने से भी क्रियाद्योतक संज्ञा सिद्ध होती है । जैसे मारता हुआ, लेता हुआ इत्यादि ।

नवम अध्याय ।

वाक्यविचार ।

कारक समेत संज्ञा और क्रिया के योग से वाक्य बनता है । वाक्य दो प्रकार के होते हैं, कर्तृप्रधान और कर्मप्रधान । जिसमें कर्ता प्रधान है वह कर्तृप्रधान और जिसमें कर्म प्रधान है वह कर्मप्रधान । यद्यपि वाक्य में

सब कारक आसक्ते हैं परन्तु उस में कर्ता और क्रिया का होना अवश्य है और क्रिया सकर्मक हो तो उस वाक्य में कर्मको भी रखो यह बात कर्तृप्रधान क्रिया की है । पदों की योजनाका यह क्रम है कि वाक्य के आदि में कर्ता, अन्त में क्रिया और शेष कारकों की आवश्यकता हो तो उनको बीच में रक्खो परन्तु पद सब ऐसे शुद्ध होने चाहियें कि जिनके अर्थ का आपस में संबन्ध हो क्योंकि पद असंबद्ध होंगे तो उनकी योजना से कुछ भी अर्थ न निकलेगा और वह वाक्य भी अशुद्ध ठहरेगा ।

शुद्ध वाक्य ।

राजा ने बाण से हरिण को मारा ।

इस कर्तृप्रधान वाक्य में राजा कर्त्ता, बाण करण, हरिण कर्म और मारा सामान्यभूत क्रिया है, ये सब पद शुद्ध हैं और एक पद का अर्थ दूसरे के अर्थ से मेल रखता है इस कारण संपूर्ण वाक्य का ' राजा के बाण से हरिण का मारा जाना ' यह अर्थ हुआ ।

असम्बद्ध वाक्य ।

बनिया बसुले से कपड़े को सींचता है ।

यद्यपि इस वाक्य में सब पद कारक समेत शुद्ध हैं ।

परन्तु एक पद का अर्थ दूसरे किसी पद के अर्थ से मेल नहीं रखता इसी कारण वाक्य का कुछ अर्थ नहीं हो सक्ता इसी लिये ऐसे वाक्य को अशुद्ध कहते हैं ।

कर्तृप्रधान क्रिया के वाक्य में कर्ता का होना अवश्य है वैसे ही कर्मप्रधान क्रिया के वाक्य में कर्मका होना अवश्य है कर्ता की कुछ अपेक्षा नहीं होती क्योंकि वहां कर्म ही कर्ता के रूप से आता है और जिन कारकों का प्रयोजन होता है उन्हे कर्म और क्रिया के बीच में रखते हैं, जैसे घोड़ा मारा गया, इस वाक्य में मारा गया यह कर्म प्रधान भूत सामान्य क्रिया है और घोड़ा कर्म, कर्ता के रूप में है इन दोही पदों से यह वाक्य पूरा हुआ है और कारकों की आवश्यकता होती है तो उनकी भी योजना कर लेते हैं, जैसे ' आटा चक्की से पीसा जाता है ' ' पहाड पै से पत्थर गिराया गया ' ये कर्मप्रधान वाक्य हैं ।

वाक्य में जो जिस पद का विशेषण हो उसको उसी पद के पहिले रखना चाहिये क्योंकि ऐसी रचना से वाक्य का अर्थ तुरन्त जाना जाता है और विशेषण अपने २ विशेष्य से पहिले न हों तो दूरान्वय के कारण अर्थ समझने में कठिनता पड़ती है ।

सविशेषण वाक्य।

निर्दई सिंह ने अपनी पैनी डाढ़ों से इस दीन हरिण को चाब डाला।

दूरान्वयी वाक्य।

बड़े बैठा हुआ एक लड़का छोटा घोड़े पै चला जाता है। इस वाक्य का अर्थ बिना सोचे नहीं जाना जाता परन्तु इसी में विशेषणों को अपने २ विशेष्य के साथ मिला देने से इसे देखते ही अर्थ समझ में आ जाता है। यथा-एक छोटा लड़का बड़े घोड़े पै बैठा हुआ चला जाता है। यद्यपि ऐसे वाक्य अशुद्ध नहीं कहाते किन्तु क्लिष्ट होते हैं।

दशम अध्याय।

क्रम से क्रियाओं के उदाहरण।

हेतुहेतुमद्भूत।

मैं विद्वान् होता तो ऐसी बात क्यों कहता।

कार्य्य कारण का फल कहने के लिये सदा हेतुहेतुमद्भूत ही की नहीं किन्तु और काल की भी क्रिया को लाते हैं। जैसे, मैं जाता हूं तो लाता हूं अथवा जाऊंगा तो लाऊंगा।

अपूर्णभूत ।

देवदत्त यज्ञदत्त को पढ़ाता था । वह न्हाता था ।

अपूर्णभूत का अर्थ पहिले बतला चुके हैं कि भूत काल की क्रिया पूरी न हो चुकी हो । यथा, देवदत्त यज्ञदत्त को पढ़ाता था । यहां यह बात प्रत्यक्ष है कि यज्ञदत्त को देवदत्त कर्त्ता की पढ़ाने की क्रिया भूत काल की है किन्तु पूरी नहीं हुई है ।

सामान्यभूत ।

मैं हुआ । तू सोआ । वह गया । उसने काम किया । घोड़ी ब्याई । उसने चिड़िया को पकडा ।

सामान्यभूत क्रिया पास के और दूर के दोनो भूतकालों को जतलाती है जैसे, मैंने आज दो घड़ी दिन चढ़े रोटी खाई । विक्रम राजा बड़ा प्रतापी हुआ जिस के राज्य में सब प्रजा सुखी रही ।

पूर्णभूत ।

पूर्णभूत क्रिया को भी सामान्यभूत की जगह बोलते हैं । जैसे मैंने रोटी खाई वा खाई थी । उसने पोथी लिखी थी । उसने पेड़ सींच थे । वह रहा था । वे गये थे । चीलें उड़ी थीं ।

आसन्न भूत ।

उसने कूआं खोदा है। लड़की ने रोटी खाई है। लड़के ने खिलौने तोडे हैं।

आसन्न भूत क्रिया उस जगह बोली जाती है जहां वर्तमान से थोडे ही काल पहिले की क्रिया कहनी होती है। जैसे मैंने रोटी खाई है तथा क्रिया का कर्त्ता और कर्म तो वर्त्तमान में हो और वह क्रिया हो चुकी हो तो वहां भी आसन्नभूत क्रिया बोली जाती है जैसे देवदत्त ने इस शाला को बैठाया है इसलिये वही इसका प्रबन्ध करेगा।

संदिग्धभूत।

मैं सोआ होऊं। उन्होंने खाया हो। पानी पड़ा हो।

संदिग्धभूत क्रिया वहीं बोली जाती है जहां भूत काल का निश्चय हो पर क्रिया का सन्देह हो। जैसे देवदत्त ने पेड़ काटा हो, तथा किसी धातु की भूत सामान्य क्रिया के आगे होना धातु की भविष्यत् क्रिया लाने से भी संदिग्धभूत क्रिया होती है। जैसे प्रश्न—तेरे लड़के ने मेरी लकड़ी तोड़ी थी? उत्तर, तोड़ी होगी।

वर्त्तमान क्रिया ।

वह बातें बनाता है । मैं मिट्टी का घोडा बनाता हूं । राजा राज करता है ।

विधि क्रिया ।

तू वहां जा । तुम सवेरे ही अपने काम पै लगो ।

सम्भावनार्थ क्रिया ।

मैं राजा होऊं । तू पानी ले आवे तो अच्छाकरे । उसको उद्योग लग जावे तो वडा आनन्द होवे ।

भविष्यत् क्रिया ।

लुहार की भट्टी में आग होगी । कल वह कलकत्ते (को) जायगा । वे आवेंगे ।

पूर्व कालिक क्रिया ।

जिस क्रिया को समाप्त करके दूसरी क्रिया में कर्त्ता प्रवृत्त होता है वह पुर्व कालिक क्रिया कहाती है । जैसे देवदत्त पगडी बांध के बाहर गया, यहां पगड़ी का बांधना पूर्वक्रिया और जाना उत्तर क्रिया है । इसी तरह सम्भाव्य भविष्यत् और सन्दिग्ध वर्तमान के भी उदाहरण स्वयं बनालो ।

एकादश अध्याय ।

पत्रलेखन ।

साम्प्रत अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के व्याकरणों में पत्र लिखने की रीति भी दिखलाई रहती है और इस विषय का वाक्य रचना में समावेश भी होसक्ता है इसलिये हम भी इस विषय को बहुत संक्षेप से यहां लिखदेते हैं ।

पत्र व अर्जी (प्रार्थनापत्र) लिखने में पहिले प्रशस्ति लिखी जाती है उस में भी जिसको चिट्ठी लिखी जाय उसके नाम के पूर्व परिगणित श्री लिखने की चाल है उसका नियम नीचे के दोहे में लिखा है और भिन्न २ प्रशस्तियां आगे लिखे हुए पत्रोंसे ज्ञात होंगी ।

दोहा ।

श्री लिखिये षट गुरुन को, स्वामि पांच रिपु चारि ।
तीन मित्र दो भृत्य को, एक पुत्र अरु नारि ॥

छोटा बडे को या बराबरी वाले को पत्र लिखे तो प्रणाम, नमस्कार या दण्डवत् लिखे और बडा छोटे को लिखे तो आशीस या आशीर्वाद लिखें ।

पत्रादि लिखने के सविस्तर नियम आदि हमारे 'पत्रादर्श' में देख लो । कीमत सिर्फ =) है ॥

पत्र छोटेकी ओर से बड़े को ।

सिद्धी श्री सर्वोपमा योग्य विश्वेशवदाराध्य पूज्यवर श्री ६ पिताजी को दासानुदास दामोदर का साष्टाङ्ग प्रणाम ।

आगे आपकी आज्ञा लेके ता० ५ अगस्ट को जो मैं निकला सो ता० ७ को दिन के १२ बजे पटने पहुंचा वहां आपकी चिट्ठी बाबू कान्ताप्रसाद को देकर सायंकाल तक उन्हीं के यहां आराम किया फिर रात ८ बजे के गाडी से वहां से रवाने होकर आज ता० ९ को काशीजी में पहुंचा रास्ते में आप की कृपा से किसी तरह की तकलीफ नहीं हुई कल से कालिज खुलने वाला है बाकी पूर्ववत् आनन्द है। छोटे भैया से कहकर हफ्ते में एक चिट्ठी कुशलवृत्त की भेजवाया करें। शुभम् ॥

ता० ९ अगस्ट सन् १८९६ ई० } आपका आज्ञाकारी पुत्र, दामोदर दास ।

पत्र बड़े की ओर से छोटे को ।

ता० १२ । ८ । ९६

श्री चिरंजीव प्राणप्रिय दामोदर को अनेक आशीर्वाद

तुह्मारा ता० ९ का पत्र पहुंचा हाल मालूम हुआ आज बाबू कान्ताप्रसाद का भी पत्र आया था अब तुह्मारी परीक्षा के दिन निकट आये हैं जहां तक होसके शरीर के स्वास्थ्य की ओर ध्यान देकर खूब अभ्यास करो बीच में तुह्मारा पढ़ना छूटने के सबब से कहीं ऐसा न हो कि तुह्मारे सपाठी आगे निकल जांय इस बात को बारंबार सोंचते रहो। यहां की फिक्र मत करना। शुभमु॥

कृपाशङ्कर

पत्र दिल्ली दोस्त को।

कलकत्ता

८।६।९७।

प्रियवर!

मुझे यहां आये दो मास व्यतीत हुए मैंने तुह्मारे पास इतनी अवधि में तीन पत्र भेजे परन्तु एक का भी उत्तर तुमने नहीं दिया क्या तुम किसी कार्य में फंसे हो या आलस्य से उत्तर नहीं देते!

यदि आलस्य ही कारण हो तो मैं भी पत्र भेजना बन्द करदूं। यहां तुह्मारे मामा के घर से हाल

मिला है कि तुम डिप्टी कलेक्टरी के लिये नामिनेट हुए हो क्या ऐसी खुशी की खबर लिखना भी तुमको आलस्य में भूल जाना उचित है ? अब आशा है कि इस पत्र के पहुंचते ही लौटती डांक से जवाब भेजकर आनन्दित करोगे । शम् ।

तुह्मारा वही
कृष्णचन्द्र

किसी सभा के सभ्य होने के लिये पत्र ।

श्रीमान् मन्त्रिवर, देशहितैषिणी सभा, लाहोर ।

महोदय,

आपकी 'देशहितैषिणी सभा' का मैं सभ्य होना चाहता हूं सभा की सहायतार्थ ५ रु० मासिक दूंगा ।

आशा है कि मेरा नाम आप व्यवस्थापक सभा की अनुमति से सभ्य नामावली में लिखकर मुझे अनुगृहीत करेंगे ।

काशी, दशाश्वमेध । } दामोदर दास एम्, ए,
ता० ५-५-९५

अपूर्व पुस्तकें।

संस्कृतसोपान।

इस समय सभी लोगों को थोड़ा बहुत संस्कृत जानने की इच्छा अवश्य रहती है पर संस्कृत को अत्यन्त कठिन समझकर लोग घबड़ा जाते हैं। वे समझते हैं कि विना काव्य और कौमुदी पढ़े संस्कृत आवेगी ही नहीं। यह भ्रम है। अगर आप लोगों को संस्कृत से [illegible]ा अनुराग है, अपने मनु भारतादि धर्म पुस्तकों को [illegible]कर उन्हें समझ लेने की आवश्यकता मालूम होती तो एक बार इस संस्कृतसोपान को अवश्य पढ़ ड़िये। आपको किसी पण्डित से पूछना नहीं पड़ेगा, यही किताब आपको [यदि थोड़ा भी हिन्दी का ज्ञान है तो] चार ही महीने में संस्कृत में बात चीत करना तथा संस्कृत ही में अपने आशय को लिखकर दिखाने की योग्यता प्राप्त करादेगी। ऐसी पुस्तक आज तक नहीं बनी है। कीमत केवल ।।) डांक महसूल -) व्ही० पी० से ।।=)

ऋजुव्याकरणदीपिका।

यह स्कूल के छात्रों के लिये बनी है, यह ऋजुव्याकरण के १, २ और ३ भाग की टीका अथवा की है, यह एक किताब पास रहने से स्कूल के संस्कृत कोर्स 'ऋजुव्याकरण' में बिलकुल कठिनाई नहीं पड़ती, यह एक ही किताब मिडिल् तक काम देती है। कीमत =) डांक महसूल)।।